




सलोकु ॥

आदि सचु जुगादि सचु ॥

है भि सचु नानक होसी भि सचु ॥17॥





असटपदी ॥

चरन सति सति परसनहार ॥

पूजा सति सति सेवदार ॥

दरसनु सति सति पेखनहार ॥

नामु सति सति धिआवनहार ॥

आपि सति सति सभ धारी ॥

आपे गुण आपे गुणकारी ॥


सबदु सति सति प्रभु बकता ॥

सुरति सति सति जसु सुनता ॥


बुझनहार कउ सति सभ होइ ॥


नानक सति सति प्रभु सोइ ॥१॥






सति सरूपु रिदै जिनि मानिआ ॥  
करन करावन तिनि मूलु पछानिआ ॥  
जा कै रिदै बिस्वासु प्रभ आइआ ॥  
ततु गिआनु तिसु मनि प्रगटाइआ ॥  
भै ते निरभउ होइ बसाना ॥  
जिस ते उपजिआ तिसु माहि समाना ॥  
बसतु माहि ले बसतु गडाई ॥  
ता कउ भिन न कहना जाई ॥  
बूझै बूझनहारु बिबेक ॥  
नाराइन मिले नानक एक ॥२॥






ठाकुर का सेवकु आगिआकारी ॥  
ठाकुर का सेवकु सदा पूजारी ॥  
ठाकुर के सेवक कै मनि परतीति ॥  
ठाकुर के सेवक की निरमल रीति ॥  
ठाकुर कउ सेवकु जानै संगि ॥  
प्रभ का सेवकु नाम कै रंगि ॥  
सेवक कउ प्रभ पालनहारा ॥  
सेवक की राखै निरंकारा ॥  
सो सेवकु जिसु दइआ प्रभु धारै ॥  
नानक सो सेवकु सासि सासि समारै ॥३॥






अपुने जन का परदा ढाकै ॥  
अपने सेवक की सरपर राखै ॥  
अपने दास कउ देइ वडाई ॥  
अपने सेवक कउ नामु जपाई ॥  
अपने सेवक की आपि पति राखै ॥  
ता की गति मिति कोइ न लाखै ॥  
प्रभ के सेवक कउ को न पहूचै ॥  
प्रभ के सेवक ऊच ते ऊचे ॥  
जो प्रभि अपनी सेवा लाइआ ॥  
नानक सो सेवकु दह दिसि प्रगटाइआ ॥४॥







नीकी कीरी महि कल राखै ॥  
भसम करै लसकर कोटि लाखै ॥  
जिस का सासु न काढत आपि ॥  
ता कउ राखत दे करि हाथ ॥  
मानस जतन करत बहु भाति ॥  
तिस के करतब बिरथे जाति ॥  
मारै न राखै अवरु न कोइ ॥  
सरब जीआ का राखा सोइ ॥  
काहे सोच करहि रे प्राणी ॥  
जपि नानक प्रभ अलख विडाणी ॥५॥









बारं बार बार प्रभु जपीऐ ॥  
पी अम्रितु इहु मनु तनु ध्रपीऐ ॥  
नाम रतनु जिनि गुरमुखि पाइआ ॥  
तिसु किछु अवरु नाही द्रिसटाइआ ॥  
नामु धनु नामो रूपु रंगु ॥  
नामो सुखु हरि नाम का संगु ॥  
नाम रसि जो जन त्रिपताने ॥  
मन तन नामहि नामि समाने ॥  
ऊठत बैठत सोवत नाम ॥  
कहु नानक जन कै सद काम ॥६॥





बोलहु जसु जिहबा दिनु राति ॥  
प्रभि अपनै जन कीनी दाति ॥  
करहि भगति आतम कै चाइ ॥  
प्रभ अपने सिउ रहहि समाइ ॥  
जो होआ होवत सो जानै ॥  
प्रभ अपने का हुकमु पछानै ॥  
तिस की महिमा कउन बखानउ ॥  
तिस का गुनु कहि एक न जानउ ॥  
आठ पहर प्रभ बसहि हजूरे ॥  
कहु नानक सेई जन पूरे ॥७॥







मन मेरे तिन की ओट लेहि ॥  
मनु तनु अपना तिन जन देहि ॥  
जिनि जनि अपना प्रभू पछाता ॥  
सो जनु सरब थोक का दाता ॥  
तिस की सरनि सरब सुख पावहि ॥  
तिस कै दरसि सभ पाप मिटावहि ॥  
अवर सिआनप सगली छाडु ॥  
तिसु जन की तू सेवा लागु ॥  
आवनु जानु न होवी तेरा ॥  
नानक तिसु जन के पूजहु सद पैरा ॥८॥१७॥

